बिहार में सूफ़ी परंपरा

प्रधान सम्पादक
डॉ. विजय कुमार



बिहार राज्य अभिलेखागार निदेशालय
मंत्रिमंडल सचिवालय विभाग, बिहार सरकार, पटना
2013

बिहार में सूफ़ी परंपरा

प्रधान सम्पादक
डॉ. विजय कुमार
निदेशक
बिहार राज्य अभिलेखागार निदेशालय

सम्पादक
सैयद शाह शमीमुद्दीन मुनएमी
सज्जादा नशीं, ख़ानक़ाह मुनएमिया, मीतन घाट, पटना सिटी

बिहार राज्य अभिलेखागार निदेशालय
बिहार सरकार, पटना
2013

हज़रत मख़दूम हुसैन बिन मुइज़ नौशाए तौहीद बल्ख़ी

सैयद शाह शमीमुद्दीन मुनएमी

15वीं शताब्दी ईस्वी के प्रारम्भ से मध्य तक ज्ञान और आध्यात्म के पटल पर बिहार जिस व्यक्तिव के कारण जाना और माना जाता रहा है, वे हैं हज़रत मख़दूम हुसैन बिन मुईज़ नौशाए तौहीद बल्ख़ी। वे न केवल विख्यात सूफ़ी हज़रत मख़दूमे जहाँ शेख़ शरफुद्दीन यहया मनेरी के विख्यात उत्तराधिकारी थे, बल्कि उत्तम कोटी के लेखक, कवि, महान आलिम व सूफ़ी, सफल गुरूवर और आदर्श पुरुष थे ।

जन्म:- आपका जन्म जौनपूर से 4मील की दूरी पर स्थित ऐतिहासिक बस्ती ज़फ़राबाद में 756 हि० /1355ई० के आस पास हुई थी । हज़रत मख़दूमे जहां ने आपके जन्म की सूचना प्राप्त होने से पूर्व ही मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी से यह भविष्यवाणी की थी कि तुम्हारे यहाँ एक पुत्र जन्मा है। मौलाना ने आश्चर्य के साथ कहा कि मेरी कोई पत्नी नहीं तो पुत्र कहाँ से जन्मेगा ?

हज़रत मख़दूमे जहां ने कहा कि तुम्हारे भाई मुईज़ुद्दीन के यहाँ पुत्र पैदा हुआ है और उनकी संतान भी तुम्हारी संतान है । इसके बाद ज़फ़राबाद से समाचार मिला कि उक्त दिन लड़का पैदा हुआ है । हज़रत मख़दूमे जहां ने अपना पवित्र वस्त्र प्रदान किया और कहा कि जब जब नवजात शिशु को कपड़े की आवश्यकता हो तो इसी वस्त्र से सी कर पहनाया जाए और आपनी पगड़ी से वह टोपी सिलवा कर भेजी कि जो छठी के अवसर नवजात शिशु को पहनाई जाती है। इस टोपी की करामात यह थी कि हज़रत हुसैन जीवन भर जब जब इस टोपी को पहनते थे तो सिर पर ढीक आती थी और जब उतार लेते थे तो छोटी प्रतीत होती थी। मख़दू हुसैन जीवन भर इस टोपी को पहनते रहे। जब मख़दूम हुसैन का निधन हुआ तो लोगों की सहमति हुई कि यह टोपी छाती पर रख दी जाए। परन्तु एक प्रिय मुरीद ने वह टोपी लेकर आपके पवित्र सर पर पहना दी और उस समय भी यह पवित्र टोपी सर पर ठीक आयी।

मख़दूम हुसैन का लालन-पालन मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी की देख-रेख और छत्र-छाया में हुआ और बचपन से ही वे अपने चाचा के संग हज़रत मख़दूमे जहाँ की सेवा में उपस्थित होते रहे ।

एक दिन हज़रत मख़दूमे जहाँ को मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी वज़ू करा रहे थे और हज़रत मख़दूमे जहाँ ने अपनी पगड़ी उतार कर नमाज़ पढ़ने की जगह पर रख दी थी । इसी बीच मख़दूमे हुसैन जो अभी अल्प आयू थे खेलते हुए इधर भाग आए और मख़दूमे जहाँ की पगड़ी अपने शीष पर रख ली और नमाज़ के स्थान पर खड़े हो कर बड़ों की भाँति नमाज़ पढ़ने लगे जब मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्खी ने देखा तो क्रोधित हुए मख़दूमे जहाँ

ने मौलाना मुज़फ़्फ़र से कहा ! मौलाना मुज़फ़्फ़र क्यों रोकते हो, यह लड़का अपना स्थान सही-सही पहचानता है ।

मौलान मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी आपको अतिप्रिय रखते और आपकी शिक्षा के साथ-साथ दीक्षा पर भी विशेष ध्यान रखते। मख़दूम हुसैन स्वयं कहते हैं:-

> "मैं जब अल्पायु था तो उसी समय से मख़दूम मुज़फ़्फ़र मुझे तहज्जुद (रात के अंतिम खंड की नमाज़) पढ़ने के लिए जगाते थे और सरीद (विशेष अरबी स्वादिष्ट पकवान) बनवा कर रखते थे। फिर जब मैं उठता था तो मौलाना मुज़फ़्फ़र कहते पहले नमाज़ पढ़ लो उसके बाद सरीद खाओ। इस प्रकार मुझे तहज्जुद की आदत डाली"।

मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी ने स्वयं आपको शिक्षा-दीक्षा प्रदान करने के अतिरिक्त दूसरे विद्वानों की सेवा में भी भेजने का प्रयास किया। इसकी चर्चा करते हुए मख़दूम हुसैन कहते हैं:-

1. मुनिसुल कूलूब-मजलिस 52

एक बार शेख़ मुज़फ़्फ़र ने मुझको मौलाना मुइनुद्दीन इमरानी के पास शिक्षा प्राप्ति के लिए ले गए । उस दिन वर्षा हो गई थी । हज़रत मुज़फ़्फ़र ने जूते हाथों में ले लिए और वहाँ पहुँचे । मौलाना मुईनुद्दीन ने हंस कर कहा मौलाना आपको पैरों से अधिक अपनी पादुकाओं की चिन्ता है । यह बात मौलान मुज़फ़्फ़र को अच्छी नहीं लगी। उत्तर दिया कि पैर अगर अपवित्र हो जाये तो उसको धोया जा सकता है, लेकिन जूते को धोना कठिन है। फिर मुझे लौटा लाए और कहा कि जो व्यक्ति संगत में बात चीत की मर्यादा नहीं रखता, उसका आदर दिल में नहीं रहता और जिस गुरू का आदर ही दिल में न रहे तो फिर ज्ञान से क्या लाभ ।

मख़दूम हुसैन अल्पायु में ही मख़दूमे जहाँ के पवित्र हाथों पर मुरीद हो गए थे, फिर मौलाना मुज़फ़्फ़र के संग मख़दूमे जहाँ के सामने ही आप भी अरब चले गए । पवित्र नगर मक्का में जिन दो नामचीन गुरूओं से आपने शिक्षा प्राप्त की वे निम्नलिखित हैं:-

1) शेख़ शमसुद्दीन ख़्वारिज़्मी

2) शेख़ शमसुद्दीन हलवाई से पवित्र काबा के समक्ष मुक़ामे इब्राहिम में पवित्र कुरआन की क़िराअत की विद्या प्राप्त की ।

इल्में हदीस का ज्ञान चार वर्षों तक मक्का के पवित्र नगर में स्वयं मौलाना मुज़फ़्फ़र से भली भांति प्राप्त किया और इस ज्ञान को एक और विख्यात विद्वान "ख़तीबे अदन" से भी प्राप्त किया ।

मख़दूम हुसैन अपने चाचा के स्वर्गवास के समय भी उनके पास आदन (वर्तमान अरब देश यमन की बंदरगाह) में थे। चाचा की वसीयत के अनुसार वे उनके बाद मख़दूमे जहाँ के दूसरे सज्जादानशीन हुए और बिहार में स्थायी रूप से निवास करने लगे तो हज़रत मख़दूमे जहाँ का काल फिर जीवंत हो उठा। आप बड़े प्रतापी और तेजस्वी सूफ़ी संत गुज़रे हैं।

मूनिसुल कुलूब में आता है कि आपके जैसा पराक्रम, रोबो-दाब और प्रताप बहुत कम सूफ़ी संतों के यहाँ देखने को मिला। उनसे आँखें चार करना असंभव था। वे जब मुखमंडल झुकाए रहते तो दूसरी ओर देखते रहते तो उनको जी भर देखा जा सकता था।

आप बड़े दानशीन और कृपालू भी थे। आपके पास आने वाला चाहे वह कोई भी हो खाली हाथ नहीं लौटता।

आपके दो विवाह हुए थे। पहली पत्नी से दो पुत्र, शाह सुलेमान और शाह सैफुद्दीन हुए तथा दूसरी पत्नी जो आपके चाचा शाह क़मरुद्दीन बल्ख़ी की सुपुत्री थीं, उनसे एक सुपुत्र, हज़रत शाह हसन दाएम जश्न बल्ख़ी हुए जो आपके बाद मख़दूमे जहाँ के तीसरे सज्जादानशीन हुए।

आपकी सेवा में अगर कोई मुरीद और शिष्य बनने की इच्छा लेकर उपस्थित होता तो आप उसको वज़ू (इस्लामी विधान के अनुसार मुँह हाथ आदि धोने) के लिए थोड़ा पानी और रोटी के साथ थोड़ी सब्ज़ी भेजते थे। अगर वह उस थोड़े पानी से वज़ू कर लेता और थोड़ी सब्ज़ी से रोटी खा लेता तो उसे अपने शिष्यों के साथ अपनी ख़ानक़ाह में प्रवेश की आज्ञा देते वरना चला देते।

दिन-रात आप लोगों की फ़रयाद सुनने, उनके प्रश्नों का उत्तर देने तथा सूफ़ी मार्ग की दीक्षा प्रदान करने में व्यस्त रहने के बाद भी अध्ययन और गद्य व पद्य की रचना के लिए समय निकाल लेते थे। आपके द्वारा रचित 25 पुस्तकों का पता चलता है, जिनमें से महत्वपूर्ण उपलब्ध पुस्तकें निम्नलिखित हैं:-

(1) हज़रत ख़म्स (अरबी भाषा में)
(2) रिसाला कज़ा व क़द्र
(3) रिसाला तौहीद
(4) रिसाला ज़िक्र
(5) औराद दह फ़सली इत्यादि ।

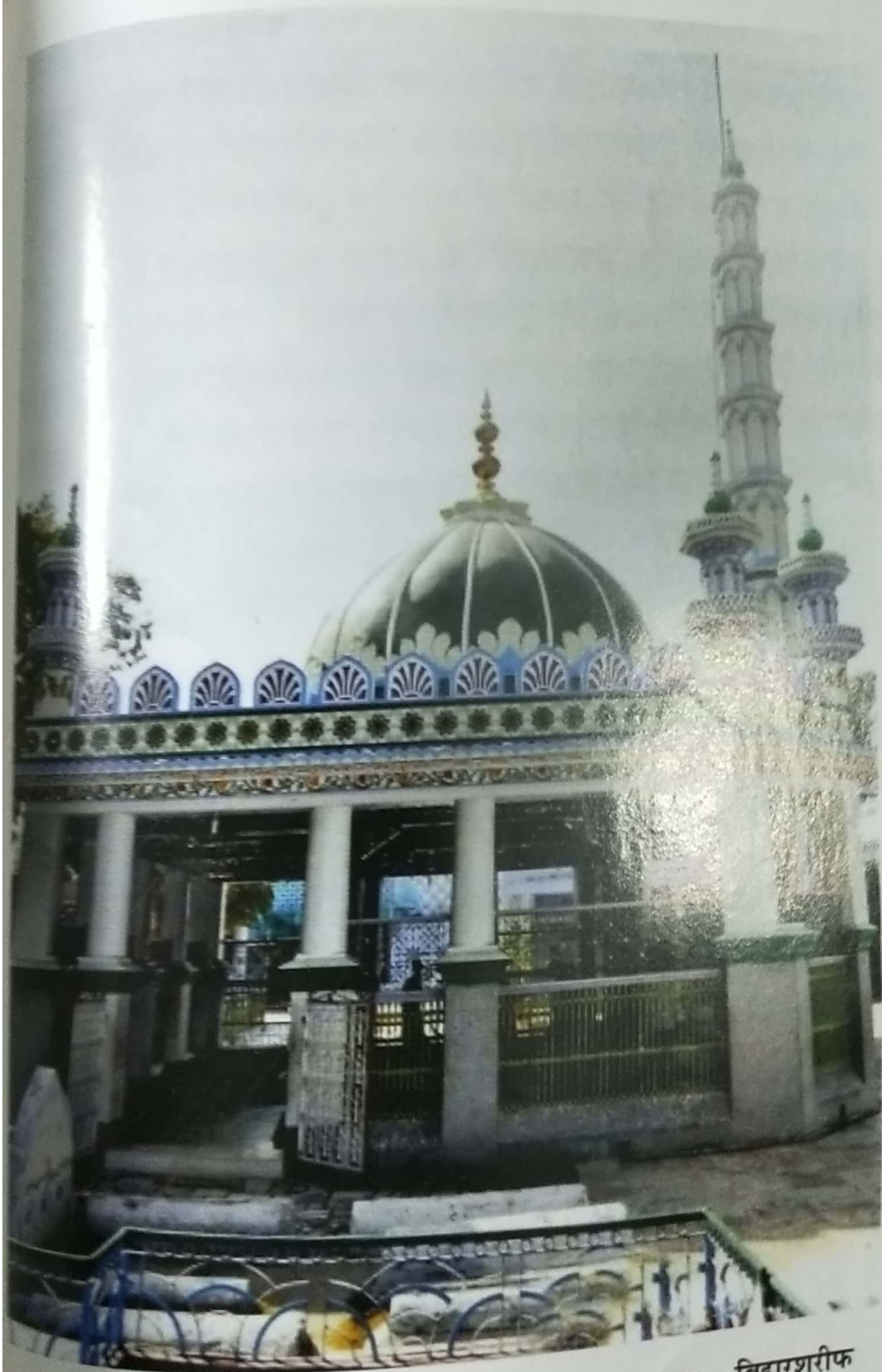
आपके प्रतिदिन के प्रवचनों को आपके प्रिय मुरीद मौलाना/नेमतुल्लाह ने "गंजे ला यख़्फ़ा" का नाम से संकलित किया, जिसकी पाण्डुलिपियाँ देश के विभिन्न ग्रन्थालयों में मौजूद है।

आपके लगभग 200 पत्रों को आपके सुपुत्र हज़रत हसन दाएम ने एकत्र कर लिया जो महत्वपूर्ण सूफ़ी विचारों के साक्षी हैं।

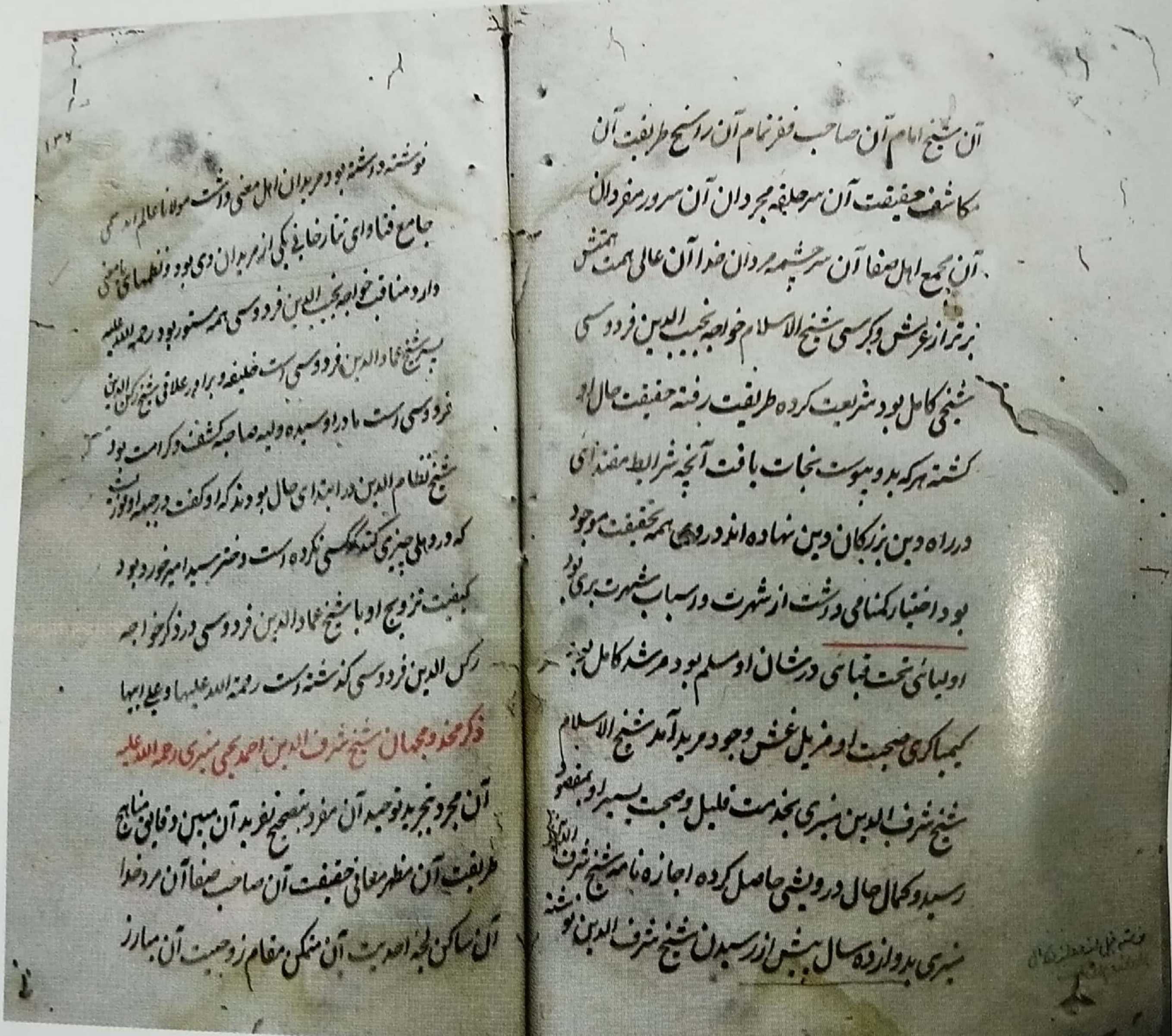
आपकी फ़ारसी ग़ज़लों का संग्रह भी मिलता है, जिससे आपके महान कवि होने का स्पष्ट संकेत मिल जाता है।

आपका स्वर्गवास 24 ज़िलहिज्जा 844 हि० को दिन की नमाज़ के समय बिहारशरीफ़ में हुआ। आपकी दरगाह, बड़ीदरगाह, बिहारशरीफ़ से पश्चिम पहाड़पूरा में सबकी श्रद्धा का केन्द्र बिन्दू है।

मख़दूम हुसैन ने मख़दूमे जहाँ और मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी के अतिरिक्त हज़रत शाह बदीउद्दीन मदार से भी दीक्षा प्राप्त की थी और विख्यात सूफ़ी ग्रंथ अवारिफ़ुल मआरिफ़ का पाठ पूर्ण किया था। हज़रत मदार ने ही आपको समन्दरे तौहीद की उपाधी दी थी।



मख़्दूमे जहां शेख शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी की बड़ी दरगाह : बिहारशरीफ



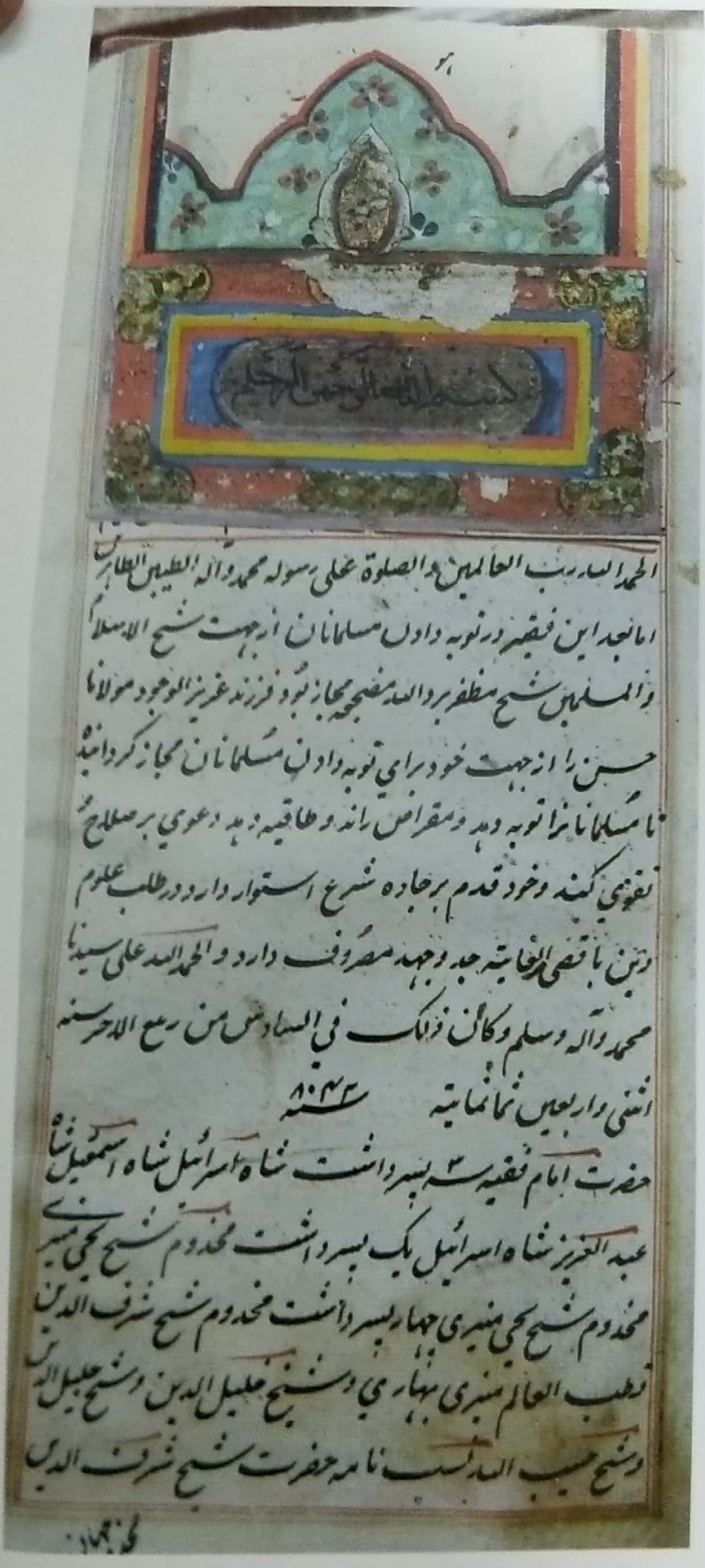
آن شیخ امام آن صاحب فقر تمام آن راسخ طریقت آن
مکاشف حقیقت آن سر حلقه مجردان آن سرور مفردان
آن مجمع اهل صفا آن سرچشمه مردان خدا آن عالی همتش
برتر از عرش و کرسی شیخ الاسلام خواجه نجیب الدین فردوسی
شیخی کامل بود شریعت کرده طریقت رفته حقیقت حال او
گشته هر که بدو پیوست نجات یافت آنچه شرایط مقتدای
در راه دین بزرگان دین نهاده اند در وی همه بتحقیق موجود
بود اختیار گمنامی داشت از شهرت و اسباب شهرت بری بود
اولیائی تحت قبائی در شان او مسلم بود مرشد کامل بود
کیمیاگری صحبت او مزیل غش وجود مرید آمد شیخ الاسلام
شیخ شرف الدین منیری بخدمت قلیل و صحبت یسیر او بمقصود
رسید و کمال حال درویشی حاصل کرده اجازه نامه شیخ شرف الدین
منیری بود و از ده سال پیش از رسیدن شیخ شرف الدین نوشته

۱۳۶
نوشته و در رشته بود مریدان اهل معنی داشت مولانا عالم اندرپتی
جامع فتاوای تاتارخانی یکی از مریدان وی بود و نظمهای با معنی
دارد مناقب خواجه نجیب الدین فردوسی همه مستور بود رحمة الله علیه
پسر شیخ عماد الدین فردوسی است خلیفه و برادر علاتی شیخ رکن الدین
فردوسی است مادر او سیده ولیه صاحبه کشف و کرامت بود
شیخ نظام الدین در ابتدای حال بود و ذکر او گفت در [illegible]
که در دهلی چیزی می کنند گسی نکرده است دختر سید امیر خورد بود
کیفیت تزویج او با شیخ عماد الدین فردوسی در ذکر خواجه
رکن الدین فردوسی گذشته است رحمة الله علیهما و علی ابیها
ذکر مخدوم جهان شیخ شرف الدین احمد یحیی منیری رحمة الله علیه
آن مجرد تجرید توحید آن مفرد تصحیح تفرید آن مبین دقائق مناهج
طریقت آن مظهر معانی حقیقت آن صاحب صفا آن مرد خدا
آن ساکن لجه احدیت آن متمکن مقام [illegible] آن مبارز

बिहार के सूफियों पर प्राचीनतम ग्रंथ : मानिकचन्द द्वारा हस्तलिखित मनाकिबुल अस्फिया की पाण्डुलिपि



कच्ची दरगाह पटना सिटी


هو

بسم الله الرحمن الرحیم

الحمد لله رب العالمین والصلوة علی رسوله محمد وآله الطیبین الطاهرین
اما بعد این فقیر در توبه دادن مسلمانان از جهت شیخ الاسلام
والمسلمین شیخ مظفر برد الله مضجعه مجاز بود و فرزند عزیز الوجود مولانا
حسن را از جهت خود برای توبه دادن مسلمانان مجاز گردانید
تا مسلمانان را توبه دهد و مقراض راند و طاقیه دهد دعوی بر صلاح
تقوی کند و خود قدم بر جاده شرع استوار دارد و در طلب علوم
دین باقصی الغایة جد و جهد مصروف دارد والحمد لله علی سیدنا
محمد وآله وسلم وکان ذلک فی السادس من ربیع الآخر سنه
اثنی واربعین وثمانمایه سنه ۸۴۲
حضرت امام فقیه ۳ پسر داشت شاه اسرائیل شاه اسمعیل شاه
عبد العزیز شاه اسرائیل یک پسر داشت مخدوم شیخ یحیی منیری
مخدوم شیخ یحیی منیری چهار پسر داشت مخدوم شیخ شرف الدین
قطب العالم منیری بهاری و شیخ جلیل الدین و شیخ جلیل الدین
و شیخ حبیب الله نسب نامه حضرت شیخ شرف الدین

मुल्ला गुलाम यहया बिहारी द्वारा लिखित ग्रंथ खानकाह बलिख़या, रायपुरा, फतूहा में सुरक्षित



बिहार राज्य अभिलेखागार निदेशालय

बिहार सरकार, पटना

अभिलेखागार भवन, जवाहर लाल नेहरु मार्ग, पटना - 800001

दूरभाष : 0612-2217196